हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण

डॉ. ज्योति दुबे

हिन्दी काव्य में प्रकृति चित्रण दो रूपों में पाया जाता है, पहला आलम्बन रूप में, दूसरा उद्दीपन रूप में,। आलम्बन रूप में प्रकृति का स्वतंत्र रूप से चित्रण किया जाता हैं और उद्दीपन रूप में मानवीय भावों को अधिक वेगवान तथा प्रखर बनाने के लिए प्रकृति चित्रण होता है। प्रकृति मानव की चिर सहचरी है। प्रकृति की गोद में पल कर ही हम इस संसार की सौन्दर्य का अवलोकन करते है। वैदिक साहित्य का अनुशीलन इस बात का साक्षी है कि उस काल में विराट चेतन सत्ता के प्रसंग में उषा, सविता, चन्द्र पवन आदि प्राकृतिक तत्वों का प्रचुर परिणाम में वर्णन हुआ है। आदिकाल से प्रकृति ने मानव जीवन को अनेक रूपों में प्रभावित किया है, मानव का अन्तर एवं बाह्य प्राकृतिक रूप सौन्दर्य से अभिभूत रहा है। प्रकृति के संवेदनशील नाना रूपात्मक व गतिशील रूप को देखकर कभी मानव मन विस्मय से तो कभी जिज्ञासा की भावना से कराह रहा है। कहने का आशय यह है कि आदिकाल से आजतक प्रकृति ने मानवीय चेतना और साहित्य को अत्यधिक प्रभावित किया है।